RECENT RESEARCHES in
SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES

Issue : 2, Year : 4
Jul.-Aug.-Sep. (2017), Pages : 139 - 141
ISSN 2348 – 3318

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

# कथाकार राजेन्द्र अवस्थी – व्यक्तित्व और कृतित्व

**योजना गुप्ता**
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग
बी0एस0एम0 पी0जी0 कॉलेज
रूड़की (हरिद्वार)

*Received* : 31/05/2017 *1st BPR* : 01/06/2017 *2nd BPR* : 12/06/2017 *Accepted* : 21/06/2017

**ABSTRACT**

साहित्य सीधा मानव जीवन से उद्‌भूत है। मानव जीवन के विविध पक्षों की यथार्थ अभिव्यक्ति साहित्य के माध्यम से ही सम्भव है और बिना मानव जीवन को अपना विषय बनाये साहित्य के पृष्ठ स्थायित्व प्राप्त नहीं कर सकते। मानव जीवन और साहित्य का कृतित्व में उनके जीवन के साहित्य मूल देखने को मिलते है। किसी भी साहित्यकार के साहित्य के मूल तत्व को हृदयगम करने के लिए उनके जीवन का सम्पूर्ण ज्ञान आवश्यक है। इस ज्ञान के अभाव में साहित्य के मुख्य बिन्दुओं को समझना आवश्यक है। सर्वप्रथम राजेन्द्र अवस्थी जी के जीवन परिचय उनकी शिक्षा, युवावस्था, विविध जीवन संघर्ष, व्यक्तित्व आदि का उल्लेख करना अति आवश्यक है। उन्होंने काव्य, उपन्यास, नाटक, निबन्ध, कहानी आदि साहित्य का प्रत्येक विद्या में उन्होंने अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया हैं आपने कुछ साहित्य का अनुवाद भी किया है। वास्तव में वैसे तो अवस्थी जी में कहानी व उपन्यास नहीं लिखे बल्कि सत्य ओर यथार्थ को शब्दों में पिरोया है।

मानव जीवन और साहित्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है, यही कारण है कि प्रत्येक साहित्यकार के कृतित्व में उनके जीवन के विविध दृष्य देखने को मिलते है। किसी भी साहित्यकार के साहित्य मूल तत्व को हृदयगम करने के लिए उनके जीवन का सम्पूर्ण ज्ञान आवश्यक है। इस ज्ञान के अभाव में साहित्य के मुख्य बिन्दुओं को समझना अति दुर्लभ है।

**जन्म एवं बाल्यकाल**

कथा शिल्पी एवं नगरीय जीवन की यांत्रिकता को अभिव्यक्त करने वाले श्री राजेन्द्र अवस्थी जी का जन्म 25 जनवरी 1931 को जबलपुर में हुआ। आपके पिता श्री घनेश्वर प्रसाद अवस्थी जी संस्कृत और हिन्दी के प्रकाण्ड विद्वान थे। ज्योतिष के तो वे विशेष ज्ञाता थे। प्रातः काल उठकर वन्दना करना उनका नियम था। सुबह सूर्योदय पर एक–एक तुलसी के पत्ते को लेकर ईश्वर के जागरण के लिए आमन्त्रित करना उनका नित्य कर्म था इसके साथ ही वे कविताएँ भी लिखते थे।

राजेन्द्र अवस्थी को जहाँ साहित्य साधना से नई प्रेरणा प्राप्त हुई, वहीं उनकी आस्तिक वृत्ति ने उनमें विद्रोह की भावना को जगा दिया। पिता परम्परावादी होना उन्हें रूचिकर नहीं लगा 'मुझे बचपन से ही लगता रहा है कि किसी के सामने सिर झुकाना सबसे निकृष्ट काम है, और यदि हमने किसी के सामने सिर झुका लिया तो हमारे पास अपना बचता ही क्या है। मुझे लगता है कि जिस दिन हमने पत्थर के सामने अपना सिर झुका दिया उस दिन हम किसी भी विदेशी ताकत या सत्ता के सामने सिर झुकाने योग्य हो जायेंगे।

अपने पिता द्वारा बड़ों के पैर छूना उन्हें पसन्द नहीं आया। इस प्रवृत्ति का उन्होंने विरोध किया और बदले में मार भी खाई।

'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' वाली कहावत के अनुसार उनकी प्रतिभा अपने बाल्यकाल से ही मुखर थी। बचपन में ही कविता सृजन की ओर उनकी रूचि रही। सातवीं–आठवी कक्षा में ही अपनी पहली लिखी अंग्रेजी कविता पर उन्हें विशिष्ट पुरस्कार डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद (भूतपूर्व राष्ट्रपति) के हाथों पाने का गौरव प्राप्त हुआ।

कुछ दिन बाद पिता का स्थानान्तरण जबलपुर से मण्डला हो गया। उनका बचपन मण्डला के गोंड जाति के लोगों के बीच बीता। श्री अवस्थी जी ने अपने बाल्यकाल की स्मृति में निमग्न होते हुए इन पंक्तियों के द्वारा लेखक से कहा 'मुझे लगता है कि सबसे पहले किसी गोंड स्त्री ने ही मुझे गोद लिया होगा' आधुनिकता से रहित आदिवासी, वन्य जीवन का वातावरण एवं प्रकृति का आंचल सभी मिलकर कथाकार अवस्थी जी के आंचलिक कृतित्व से बाल्यकाल से ही प्रेरणादायक सिद्ध हुए।

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 2, Year : 4, Jul.-Aug-Sep. (2017), Pages : 139-141 , ISSN 2348 – 3318

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

**शिक्षा एवं युवावस्था**

अवस्थी जी ने प्रारम्भिक परीक्षाएं जबलपुर से उत्तीण की। इसके पश्चात् कुछ दिन मण्डला में अध्ययन किया और वहाँ से हाईस्कूल की परीक्षा पास की। इसके बाद कालेज की पढ़ाई फिर जबलपुर से और बाद में नौकरी करते हुए एम0ए0 की व्यक्तिगत परीक्षा के रूप में पास की।

काल्यकाल के संस्कार के रूप में बड़े बीज युवावसीा में आकर मुखर हो उठे थे। स्वाभिमानी प्रवृत्ति साहित्य के प्रति रूझान अब उनमें दृढ़तर ही चला था। बचपन में आदिवासियों के साथ बिताये दिनों ने उनमें एक अपनत्पव की भावना भर दी। उनका सरल, निश्छल और मन को छू लेने वाला स्नेह उन्हें बरबस आदिवासियों की भूमि की ओर खींच लिये जाता था। फलस्वरूप कॉलेज शिक्ष पूरी करने के बाद आदिवासियों के इलाकों में वे लगभग एक वर्ष भ्रमण करते रहे।

अवस्थी जी ने आदिवासियों के बीच जो क्षण व्यतीत किये उनका अपनी दृष्टि से अलग एक महत्व है। बैरियर डॉ0 आल्विनका सहचार्य इन्हें मिला (ये पाश्चात्य विद्वान थे जिन्होंने बाद में भारतीय नागरिकता स्वीकार कर ली थी। वे बाद में भारतीय शासन के सलाहकार भी रहे। आदिवासियों पर सबसे अधिक कार्य इन्होंने ही किया। आदिवासियों के प्रत्येक अंतरंग पक्ष का चित्रण इन्होंने किया है। आदिवासियों को निकट से जानने, समझने और उनकी प्रत्येक गतिविधि के निरीक्षण के लिए उन्होंने आदिवासी समाज में छः शादियां की। वे शादी के बाद उस कबीले की सम्पूर्ण रीतिरिवाज, कार्यप्रणालियाँ आदि जान लेने पर उस जाति के रिवाज के मुताबिक रूप या चुकाकर उस पत्नी को छोड़ देते थे और दूसरी आदिवासी स्त्री से शादी कर लेते थे। वे गाँधी जी के भक्त थे। अवस्थी जी ने उनके समीप रहकर आदिवासियों के जीवन के दर्शन को समझन का सफल प्रयास किया।

'शहर से दूर एकान्त प्रिय भोले भाले प्राणी मुझे सदैव आकृष्ट करते थे' अवस्थी जी का यह आकर्षण उनके द्वारा किया गया यह यथार्थ अध्ययन अंचल में बसे इन भोले प्राणियों के रीति–रिवाजों, जीवन–दर्शन तथा मानवी तत्वों के उद्घाटन में पूर्णतः सहायक सिद्ध हुआ। जीवन के मनौवैज्ञानिक निरीक्षण एवं परीक्षण की उनकी दृष्टि भी विकसित हुई।

अवस्थी जी का भाषण देने में विशेष रूचि रही। ऐसी विभिन्न प्रतियोगिताओं में उन्होंने बड़ी लगन से भाग भी लिया। स्कूल जीवन में उन्हें भाषण प्रतियोगिता में एक किताब पुरस्कार रूप में प्राप्त हुई। यह किताब दर्शाती थी कि विभिन्न वक्ताओं को भाषण देने में किस तरह सफलता प्राप्त हुई। अवस्थी जी की इसी पुस्तक से हिटलर की भाषण कला के विषय में पढ़कर प्रेरणा प्राप्त हुई। वे भी उसी तरह नदी के किनारें जाकर एकान्त में भाषण देते, तो कभी काँच और दीवार के सामने भी भाषण देने का अभ्यास करते थे। भाषण प्रतियोगिता में, इसी कारण उन्हें सदैव प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

**विविध जीवन संघर्ष**

मेरा जीवन आकस्मिक घटनाओं का पुलिन्दा है। संयोग मेरे जीवन के अविच्छिन्न अंग रहे है। कहते हुए अवस्थी जी अतीत की स्मृतियों में खो जाते है।

वे चाहे इसे आकस्मिक घटनाएं स्वीकार करें लेकिन इन सबके पीछे इनका अदम्य उत्साह, उमंग और कुछ कर दिखाने की प्रवृत्ति रही और जीवन के विविध मोड़ों पर वे सहज ही अपने को समायोजित करते गये। इस पथ पर उन्हें कई प्रकार के आर्थिक, मानसिक संघर्षों का भी सामना करना पड़ा लेकिन दुखों की नगण्य समझने वाली अकांक्षा उन्हें इन बातों को सहज स्वीकार करने की प्रेरणा देती रही। निर्द्वन्द प्रकृति के इस कथाकार ने आकस्मिक घटनाओं को अपने स्वाभाविक सौजन्य के अनुरूप ही ग्रहण किया।

उन्होंने सर्वप्रथम कवि के रूप में उत्साहपूर्वक कवि सम्मेलनों में जाना शुरू किया। कवि सम्मेलन में उन्हें सम्मान मिला परन्तु एक दिन एक प्रसिद्ध कवि महोदय को अपनी कविताएँ दिखाने और उनके द्वारा उपेक्षा करने पर उनकी कविता से अरूचि हो गयी।

**साहित्यिक व्यक्तित्व**

20वीं सदी का उत्तरार्द्ध लेखन की विविध घटनाओं से भरा है। हिन्दी के समकालीन रचनाकारों में 'हिन्दी वैमनस्य' को इस विविधता से समृद्ध करने वाले सोच के नये धरातलों के अन्वेशक, प्रखर चिन्तक राजेन्द्र अवस्थी का नाम हिन्दी जगत की एक महत्वपूर्ण घटना है। स्व0 मोहन राकेश के अभिन्न मित्र राजेन्द्र अवस्थी नई पीढ़ी के बीच बिल्कुल राकेश जी की तरह ही आदणीय एवं लोकप्रिय तो हैं ही, साथ ही अपनी कुछ मौलिक विशिष्टताओं के करण एक अलग 'पहचान' भी रखते हैं। उनका साहित्यिक व्यक्तित्व अत्यन्त सहज सरल एवं तरलता ओढ़े हुए है। वे मित्रों के बीच खूब खुलकर हंसते हैं, किन्तु उनकी इस हँसी के पीछे उनकी 'दार्शनिकता का चेहरा' साफ झलकता है। स्वभाव से मूलतः कवि है। लेकिन कविताएँ वे ज्यादा नहीं लिख पाए। फिर भी कथाकार अवस्थी जी के शिल्प और शैली में कविता के मूल तत्वों को खोजना कठिन नहीं है। उन्हीं की कुछ पंक्तियाँ –

'समय उन्हीं को पूजता है
जो नये स्तम्भों की नींव रखते हैं
और प्रतिकूल हवाओं के सहारे तैरकर आगे बढ़ते है'

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 2, Year : 4, Jul.-Aug-Sep. (2017), Pages : 139-141 , ISSN 2348 – 3318

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

राजेन्द्र अवस्थी हर पल चिन्तन में डूबे हुए या हर क्षण साहित्य में रमें हुए या जिन्दगी के वास्तविक प्रश्नों से भरे हुए किसी अहमवादी व्यक्तित्व का नाम नहीं वरन् दोस्तों के बीच, दोस्तों से, दोस्तों की बातें करते हुए, बातचीत का पूरा मजा लेते हुए, आत्मीयत के क्षणों के बीच, अपने जीवन के रचनात्मक क्षणों को जीते हुए या फिर उनकी तलाश करते हुए, एक ऐसे ही असाधरण व्यक्तित्व का नाम हैं, जो अपने भीतर मौजूद सृजन–चेतना और विचार–ऊर्जा के प्रवाह को अपने 'रचनाक्षण' को पूरी जिम्मेदारी के साथ बचा लेता है।

एक समय था, जब तृषित के नाम से उनकी कविताएँ देश की पत्र–पत्रिकाओं में छपा करती थी। 'जंगल के फूल' और 'लमसेना' उनकी विशिष्ट कृतियाँ है। आदिवासी संस्कृति पर कलम चलाने वाले शायद वे पहले कथाकार एवं उपन्यासकार हैं जो इन उपेक्षित जनजातियों के जीवन पर लेखन के उद्देश्य से जंगल–जंगल भटकते फिरे और अपने लेखन की इस यायावरी में सफल भी हो गये।

अवस्थी जी एक सफल कवि, कथाकार, उपन्यासकार, पत्रकार, दार्शनिक, सैलानी, मित्र भाई और सब कुछ हैं। उनका साहित्यिक व्यक्तित्व किसी भी प्रकार की बनावट से कोसों दूर हैं। वे स्वाभाविक रूप से सरल हैं। उनका काल चिन्तन रामानन्द जोशी को बिन्दु–बिन्दु विचार से बहुत आगे चिन्तन के चरम शिखरों को स्पर्ष कर रहा है। उनकी यात्राएं जोखिम–भरी और डायरियाँ रसपूर्ण है। रियोर्ताज शैली का विकास हिन्दी में उन्हीं के प्रयासों से सफल हुआ है। वे लेखक की मन स्थितियों के चतुर–चितेरे हैं। उनकी रचनताओं में उठी मनोवैज्ञानिक समस्याऐं आज के मानव मन की महत्वपूर्ण समस्याएं हैं। वे भावी समाज की उन्नति के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं और नये लेखन की दिशा में भावी पीढ़ियों का पथ भी आलोकित करते है।

**राजेन्द्र अवस्थी कृतित्व**

डॉ0 राजेन्द्र अवस्थी का वर्तमान साहित्यकारों में प्रमुख स्थान है। आपने अपनी लेखनी से साहित्य की सभी विधाओं की समृद्धशाली बनाया है। इतने कम समय में इतनी अधिक प्रसिद्धि बहुत कम साहित्यकारों को प्राप्त हो पाती है। आपने अपना सम्पूर्ण साहित्य खड़ी बोली में लिखा है। अंग्रेजी–साहित्य का भी आपने अनुवाद किया है। वैसे तो आपके साहित्यिक जीवन का प्रारम्भ उसी समय हो गया था, जब आपने अंग्रेजी में अपनी प्रथम कविता प्रथम कविता लिखी किन्तु प्रकाशन की दृष्टि से आपके कलाकार जीवन का प्रारम्भ 'उलझन' और 'गुण्डा' कहानी से हुआ। लेखक ने अंग्रेजी कविता के बाद और उपर्युक्त कहानियों के बाद अनेक हिन्दी कविताओं का सृजन किया।

साहित्यकार जगत में आपका नाम सम्पूर्ण रूप से उस समय उभर कर सामने आया जब आपकी प्रथम कहानी संग्रह 'मकड़ी के जाले' प्रकाशित हुआ। यह संग्रह 'हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी' से 1958 मे निकला था। इस कहानी संग्रह के पाँच संस्करण हुए।

अवस्थी जी जब कविता लिखा करते थे और कवि–सम्मेलनों में भाग लिया करते थे तब साहित्य जगत में आप 'तृषित' के नाम से जाने जाते थे किन्तु जब आपकी अपनी लेखनी ने काव्य–सृजन को छोड़कर 'गद्य' की ओर रूख (उन्मुख) हुए तो आपने इस उपनाम को हटा दिया। आज आप 'राजेन्द्र अवस्थी' के नाम से साहित्य में अपनी पहचान बनायें हुए है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**


- आलोचना : इतिहास तथा सिद्धान्त– खत्री एवं चौहान, पृ0सं0–181
- साहित्यशास्त्र, डॉ0 रामकुमार वर्मा, पृष्ठ सं0–25।
- आधुनिक साहित्य– नन्द दुलारे वाजपेयी, पृष्ठ सं0–439।
- साहित्यिक व्यक्तित्व– भगवान स्वरूप चैतन्य पृष्ठ सं0–103, संस्करण प्रथम।
- वरदान– प्रेमचन्द।
- ज्ञानोदय – रमेश बक्षी – दिसम्बर, 1965।